सप्रसंग व्याख्या करू (मैथिली प्रतिष्ठा) part-II

Q :- समता अछैक कतए सँ करता जनकपुरक श्रीमान ?
किन्तु विदेह वैह कहबै छथि, मारिक अहाँ किसान ।।

उत्तर :- प्रस्तुत अवतरण प्रतिपदा क हलधर शीर्षक कविता सँ उद्धृत कयल गेल अछि। एहि अवतरण मे सुमनजीक प्रगतिवादी भावना स्पष्ट रूप सँ परिलक्षित होइत अछि। कविक समक्ष तीन गोट हलधर छथि, एक द्वापरक हलधर दोसर त्रेताक हलधर आ तेसर युग-युग सँ चिर उपेक्षित हलधर अर्थात हरवाह लोकनि। द्वापर तथा त्रेताक हलधर भेलाह बलराम आ जनक हरवाह लोकनिक दयनीय दशा सँ द्रवित भए कवि हुनक समक सम्बोधित करैत तुलनात्मक दृष्टि सँ देखैत जनक आ बलराम अहाँ लोकनिक समकक्ष मे नहि आबि सकैत अछि। जनक सँ हलधर भेलाह श्वेतक उपज जानकी-क अपन अपन घर के अलंकृत कयलनि। कविक व्यक्तिगत भावना छल जे जनकल्याणक भावना सँ अभिप्रेरित भए कविता काव्य करैत छलाह। एहि पंक्तिक अवतरणक भावना सरल एवं बोधगम्य अछि उपमालंकारक विन्यासक संगहि प्रगति भावना सन्निहित अछि, सुन्दर पद-योजना तँ कविक प्रखर काव्य प्रतिभाक परिचायक कहल जा सकैछ।

NOKIA

Scanned with CamScanner